

ल्यूसर्न की वैज्ञानिक खेती

राजकुमार

बी.एससी. (आनर्स) कृषि, आर.एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज, धामपुर, बिजनोर, (उ०प्र) भारत-
246761

Email: www.rajkumar97611@gmail.com

परिचय

ल्यूसर्न को "चारा फसलों की रानी" भी कहा जाता है। उत्तर भारत में ल्यूसर्न को "अल्फाल्फा" या "रिज्का" के नाम से भी जाना जाता है, यह एक प्रोटीनयुक्त चारा है और यह एक बारहमासी पौधा है और एक ही बार उगाने पर 3-4 वर्षों तक चारा प्रदान कर सकता है। यह प्रोटीन के साथ-साथ मिनरल और कैल्शियम का भी प्रमुख स्रोत है। यह एक स्वादिष्ट हरा चारा है।

वानस्पतिकनाम: मेडिकैगो सैटिवा एल.

परिवार : लेग्यूमिनोसी

उद्गमस्थल : दक्षिण-पश्चिम एशिया

क्षेत्रफल एवं वितरण

भारत में ल्यूसर्न मुख्यतः पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, तमिलनाडु के सिंचित क्षेत्रों तथा लद्दाख के लेह क्षेत्र में उगाया जाता है। यह आमतौर पर रबी मौसम के दौरान एक महत्वपूर्ण चारे की फसल के रूप में उगाया जाता है, उन क्षेत्रों में जहां बरसीम के लिए पानी की आपूर्ति अपर्याप्त है। यह बरसीम (दिसंबर-अप्रैल) की तुलना में लंबी अवधि (नवंबर-जून) के लिए हरे चारे की आपूर्ति करता है। हालांकि ल्यूसर्न शीतोष्ण क्षेत्र का मूल निवासी है, लेकिन इसे उष्णकटिबंधीय क्षेत्र के अधिकांश देशों में भी सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

पोषकमान

ल्यूसर्न एक उत्पादक चारा है जो न केवल विकास में सहायक हो सकता है बल्कि आवश्यकतानुसार खिलाए जाने पर 8 किलोग्राम तक दूध उत्पादन भी कर सकता है। इसकी कई किस्में हैं लेकिन सिरसा के चारा अनुसंधान केंद्र में विकसित प्रकार 8 और 9 को उत्तर प्रदेश में अपनाते की सिफारिश की गई है। इसमें परिपक्वता के अनुसार 18-22% कूड प्रोटीन और 25-35% कूड फाइबर होता है।

मिट्टी की आवश्यकता

ल्यूसर्न को विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उगाया जा सकता है। हालांकि, तटस्थ पी.एच. वाली अच्छी जल निकासी वाली उपजाऊ मिट्टी आदर्श होती है। यह अम्लीय मिट्टी के प्रति अतिसंवेदनशील है, इसलिए इसे 6.5 से नीचे पी.एच. वाली मिट्टी में तब तक नहीं उगाया जा सकता जब तक कि इसमें चूना न डाला जाए।

भूमि की तैयारी

ल्यूसर्न को एक बढ़िया बीज बिस्तर की आवश्यकता होती है। पिछली फसल का अवशेष नहीं रहना चाहिए। बुआई से पहले सिंचाई से पहले खेत की हैरो से 2-3 बार जुताई करनी चाहिए।

बीजदर एवं बुआई विधि

बीजदर 20-25 किलोग्राम/हेक्टेयर की बीजदर अच्छी फसल के विकास के लिए पर्याप्त है जब इसे कतार में प्रसारित किया जाता है बुआई के लिए 12-15 किलोग्राम/हेक्टेयर बीजदर की आवश्यकता होती है। इसकी बुआई सीडड्रिल या देसी हल से भी की जा सकती है। ठोस रोपण और पंक्ति से पंक्ति की दूरी 25-30 सेमी. बीज 1.5 से.मी. से अधिक गहराई में नहीं बोना चाहिए। बुआई की छिटकवा विधि के तहत बीज को जल्द से जल्द मिट्टी में ढक देना बहुत जरूरी होता है।

किस्में

किस्मों के नाम	कृषित क्षेत्र का नाम	उपज (टन/है०)
सिरसा-8	उत्तरी क्षेत्र	80-85
आनंद-2	गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश	80-100
आनंद-3	पहाड़ी क्षेत्र	40-50
आर० एल०-88	संपूर्ण क्षेत्र	75-100
को०-1	तमिलनाडु और कर्नाटक	80-90
टी०-9	उत्तरी क्षेत्र	80-95

उर्वरक प्रबंधन

बुआई के समय 25 किग्रा N₂ और 100 किग्रा P₂O₅/हेक्टेयर की बेसल ट्रेसिंग की आवश्यकता होती है। उर्वरक को 10 सेमी की गहराई तक खोदा जाना चाहिए। बाद में आगामी वर्षों में नवंबर के महीने में 125 किलोग्राम P₂O₅/हेक्टेयर डालना चाहिए। बारहमासी फसल होने के कारण, हर साल 25-30 क्विंटल FYM/हेक्टेयर/वर्ष डालना महत्वपूर्ण है।

जल प्रबंधन

पहली सिंचाई बुआई के लगभग एक माह बाद करनी चाहिए। अगली सिंचाई गर्मियों के दौरान 10-15 दिनों के अंतराल पर, शरद ऋतु के दौरान 15-20 दिनों के अंतराल पर और सर्दियों के दौरान 20-25 दिनों के अंतराल पर की जा सकती है।

खरपतवार नियंत्रण

पहली निराई-गुड़ाई बुआई के 20-25 दिन बाद करनी चाहिए। बुआई के 5-10 दिन बाद पेंडीमेथालिन 1-2 किग्रा/हेक्टेयर (उभरने से पहले) या डाइक्वाट 6-10 किग्रा/हेक्टेयर की दर से कुस्कटा को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करता है।

कटाई एवं उपज

पहली कटाई बुआई के 50-55 दिन बाद की जाती है और अगली कटाई 25-30 दिनों के अंतराल पर की जाती है जब फसल मिट्टी की सतह से 60 सेमी की ऊंचाई प्राप्त कर लेती है। एक वर्ष में, अक्टूबर-अप्रैल के बीच 8-10 कटाई की जा सकती है, जिसमें 80-120 टन/हेक्टेयर हरा चारा और 18-20 टन/हेक्टेयर सूखा चारा उपज होता है। बारहमासी किस्मों को एक ही खेत में 3-4 साल तक रखा जा सकता है।

